OM-3 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 10/04/2021 2:26 PM Page 4

पवित्रता की पात्रता से बनी प्रभु प्रिय

कमाल थी... दादी की दृष्टि

ब्र.कु. हंसा दीदी,निजी सचिव दादी जानकी

हमने दादी को बहुत ही नज़दीक से देखा, जाना और अनुभव किया कि कैसे दादी ने भगवान को अपने जीवन में बसा लिया था। कैसे वो सिमरण करके औरों को स्मृति दिलाती थीं कि मैं कौन, मेरा कौन और मुझे क्या करना है। दादी से जो भी मिलने आते, वे हमेशा उनका बुद्धियोग बाबा से ही जुटातीं। पार्टी में आने वाले भाई-बहनें हमसे यही रिक्वेस्ट करते थे कि प्लीज़ बहन जी हमको दादी की एक मिनट दृष्टि दिला दो। क्योंकि वो एक मिनट की दृष्टि उन्हों के लिए लाइफ टाइम एक यादगार रह जाती। और दादी एक ही मिनट की दृष्टि में सभी को निहाल कर देतीं। दादी के जीवन में ये भी देखा कि उन्होंने कुछ भी कल के लिए नहीं छोड़ा। जो भी करना है अभी कर लो, कल किसने देखा। तो हम भी जो भी उनके सेवा साथी थे, तो हम भी सदा मिलेट्री की तरह रेडी रहते थे। दादी इशारा दे और हम तुरंत कर लेते थे, हम चल पड़ते थे। दादी कभी भी बाबा की सेवा में ना नहीं कहती थीं बल्कि वो चाहती थीं कि हम और भी उनसे सेवा करवायें। और भी लोगों से मिलवायें। तो ऐसे दादी आज सबके दिलों में अपनी छाप छोड़ कर गयीं। दादी खुद कहते थीं कि मैं जान की 'की' हूँ। और सचमुच वे सबके दिलों को छू गईं। आज हम सब उनको याद कर रहे हैं। तो हमें उनसे यही सीखने को मिलता कि जो दादी ने किया उसी कदम पर कदम रख हम सब आगे बढ़ें।

दादी सबका ध्यान रखते हुए उनका भाग्य बनातीं

जब मैं पुणे में 1968 में थी तो उस समय दादी की दृष्टि ने मेरे तीसरे नेत्र(आत्मा) का ऑपरेशन किया। और वो तीसरा नेत्र खुला, फिर तो सारा जीवन मैं बाबा के साथ ही चलती रही। सारे विश्व में जिन आत्माओं का ड्रामा अनुसार आरंभ का पार्ट था वो जल्दी नज़दीक आते गए। 40 वर्ष जो दादी विदेश में रहीं, उन वर्षों के अन्दर बाबा का कार्य 120 देशों में पहुंचा। मेरी लौकिक माँ(रजनी बहन) ज्ञान में थी परंतु मेरे लौकिक पिता(मुरली दादा) ज्ञान में नहीं थे, परन्तु दादी के साथ उनका बहुत स्नेह भरा सम्बन्ध था। बाबा ने दादी को इशारा दिया था कि ये अच्छी आत्मा है, तुम सदा इसका ध्यान रखना। तो दादी फोन भी करती रहतीं, तो कभी टोलियां, कभी-कभी भोजन भी भेजती थीं। तो इस तरह मेरे लौकिक पिता को बाबा के यज्ञ के नज़दीक आने का मौका बना, उनकी दिल पिघलती गई और वे भिन्न-भिन्न कार्यों में सहयोगी भी बने। और जब फर्स्ट डेलिगेशन आया तो दादी ने हमको पत्र लिखा था कि बाबा के पाँच बच्चे आ रहे हैं। अमेरिका जा रहे हैं कॉन्फ्रेंस में निमन्त्रण पर। तो क्या आप चाहते हो कि वो लंदन रुकें? पिता जी की दिल बहुत बड़ी थी, सामाजिक तौर से तो उन्होंने तुरंत कहा हाँ। तो पाँच आत्मायें हमारे घर पर आकर रहीं। विदेश में सेंटर कोई भी नहीं था। तो हमने ये देखा कि बाबा कभी किसी का रखते नहीं हैं, भविष्य में जो मिलेगा वो तो होगा ही, परन्तु इस जन्म में भगवान उसका रिटर्न तुरंत ही देते हैं। तो मुरली दादा ने जो पाँच आत्माओं को एक मास के लिए बड़े ही प्यार से अपने घर में लंदन में रखा। तो बाबा ने उसका रिटर्न ये दिया जब वो अकेले हो गये रजनी बहन के अव्यक्त होने के पश्चात्, तो बाबा ने उन्हें लगभग 16 वर्ष तक फाइव स्टार ट्रीटमेंट से पालना देकर रखा। दादी जी के संग-संग और लास्ट में भी वो दादी की दृष्टि लेकर ही उड़े बाबा के पास। तो दादी की पालना और बाबा की आज्ञा और उस आत्मा का भी भाग्य तो बाबा तुरंत ही अवश्य ही इस जन्म में हर प्रकार का रिटर्न देते हैं।

ब्र.कु. जयंती दीदी, निदेशिका,यूरोप

ब्र.कु. मोहिनी दीदी, न्यू यॉर्क

हर एक परमात्मा से वर्सा प्राप्त करे

दादी का हर संकल्प, हर बोल, उनका हर कर्म हमारे लिए एक उदाहरण था। हमें उनसे प्रेरणा तो मिलती ही थी, लेकिन हम सभी के अन्दर जिस भी गुण की आवश्यकता होती थी वो प्रगट हो जाता था। कभी उदास मन या कम उमंग-उत्साह के साथ दादी के सामने जाते, तो उस टाइम दादी को देख कर, दादी के साथ बैठकर, दादी जिस तरह से हमको टोली देती थीं, तो उमंग-उत्साह के पंख लग जाते थे। तो इस तरह से दादी से, उनके सामने जाने से गुणों की प्राप्ति होती थी, शक्तियों का अनुभव होता था। दादी जी मुख से बोलकर कम, किन्तु अपने गुणों से सबको शिक्षा देती थीं। दादी के अन्दर बहुत सी विशेषताएं थीं। उनका दिल दया से भरपूर था। वो सदा ही ये सोचती थीं कि मैं किस तरह से हरेक को प्राप्ति स्वरूप बनाऊं या कोई भी प्रकार की हमें आवश्यकता है तो दादी एक चैरिटेबल सोल, पुण्य आत्मा की तरह, हमेशा दाता और वरदाता बनकर हमें देती रहती थीं।

राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

ईश्वरीय नशे में रहकर, किया नश्वर देह का त्याग

स्वयं भगवान शिव ने इस धरा पर अवतरित होकर महान रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ की स्थापना की। और इसी स्थापना में जिन पवित्र और महान आत्माओं ने अपने जीवन को कुर्बान किया यानी अपने शरीर रूपी अश्व को स्वाहा कर दिया, उनमें से एक थीं दादी जानकी जी। जिन्हें स्वयं ब्रह्मा बाबा 'जनक' कहकर पुकारते थे। क्योंकि वो अधिकतर समय विदेही स्थिति में रहती थीं। योगयुक्त ज्ञान-चिंतन में मग्न, अपना स्वंस्व स्वाहा करने वाली दादी जी ब्रह्माकुमारीज़ की चीफ रहीं अनेक वर्षों तक। और उससे पहले उन्होंने अनेक देशों में ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग का परचम लहराया। वो ऐसी आत्मा थीं जो अंग्रेजी न जानते हुए भी अनेक देशों के लोगों को राजयोगी, पवित्र, सात्विक बनाने में सफल रहीं। अनेक ईश्वरीय वरदान उनके साथ थे। अनेक ईश्वरीय शक्तियां उन्होंने संग्रहित की थीं। वे एक श्रेष्ठ योगिनी थीं। मैंने उनको 52 वर्ष तक देखा। मैं देखता था, अपने चिंतन में रहने वाली, इधर-उधर न देखने वाली, डीप साइलेंस की अनुभूति में रहकर चारों ओर शांति के वायब्रेशन फैलाने वाली ये महान आत्मा हमारे बीच में थी। हम अति गौरवान्वित थे ये देखकर कि ये महान यज्ञ, ये ईश्वरीय ब्राह्मण परिवार, ऐसी महान आत्मा से सुशोभित है जो परम पवित्र हैं, जो पूजनीय हैं, जो अनेक गुणों से सम्पन्न हैं। तो ऐसी महान तपस्विनी इस संसार को छोड़कर सूक्ष्म वतन वासी बनीं, फरिश्ता बनीं, विश्व सेवा के लिए। वो इस धरा पर जैसे कि अवतार थीं, वरदान थीं। ये महान आत्मायें संसार की सुंदरता होती हैं। जब ये चलती थीं तो चारो ओर सैंकड़ों लोग खड़े हो जाते थे, उनकी एक नज़र पाने के लिए। उनको चलता देखकर लोग प्रेरणा लेते थे कि फरिश्तों की चाल ऐसी होती है। उन्होंने जीवन में सदा ही आदर्श प्रस्तुत किया। वे बहुत अच्छी क्लास ही नहीं कराती थी बल्कि जो कराती थीं वो प्रैक्टिकल उनके जीवन में था। अन्तिम एक वर्ष में जब उनकी शारीरिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी और जब वो क्लास में पहुंचती थीं तो बहुत ही पावरफुल रूप से कहती थीं कि हमें अभ्यास करना है 'मैं कौन मेरा कौन'। ये राजयोग की सर्वश्रेष्ठ स्थिति है। और अन्त तक भी वे इसी स्थिति में रहीं। हमें पूर्ण विश्वास है कि उन्होंने स्मृति स्वरूप होकर स्व-इच्छा से इस ईश्वरीय नशे में रहकर, नश्वर देह का त्याग किया। आज भी वे सूक्ष्म रूप से हमारे मध्य हैं। ऐसी महान आत्मा को उनकी प्रथम पुण्य तिथि पर शत् शत् नमन् हो।

पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्ड रिलीजंस,मेलबॉर्न ऑस्ट्रेलिया-2009 में सर्व धर्म गुरुओं के साथ दादी जानकी जी।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- - 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये,
आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या
बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।